अध्याय - 1

भारत में आदिवासियों का अध्यायन मानवशास्त्र के अंतर्गत 1960 से रेडक्लिफ ब्राउन के भारत आगमन के साथ प्रारंभ हुआ। आदिवासियों या जनजातिय धर्म को समझना मानवशास्त्र का एक महत्वपूर्ण विषय रहा है।

समाज सर्वव्याप्त और सार्वभोमिक है। अपने बढते स्तर के साथ काई भी मानव पूर्व से लेकर वर्तमान तक किसी-न-किसी समाज और धर्म से सम्बन्धित रहा है। धर्म के सम्बन्ध में तो यह कहा जा सकता है कि पूर्व से लेकर वर्तमान तक और संभवत:सविष्य में भी कोई भी मानव न तो धर्म के बिना रहा है और न रह पाएगा, भले ही उसका धर्म अंर्तव्याप्त हो पर मानव या मानव निर्मित समाज न तो धर्म विहिन था न है। सामाजिक मानव विज्ञान का सम्पूर्ण सामाजिक परिवेश ही धर्म है जिसे वह स्वयं बनाता है और उसका पालन करता है।

गोंड जनजाति को लोकसंख्या पूरे भारत में 9 मिलियन है। सबसे ज्यादा मध्यप्रदेश में पायी जाती है। उसके करीब-करीब छत्तीसगढ, महाराष्ट्र में इनकी आबादि है। महाराष्ट्र में इनकी आबादी गडचिरोली और चंद्रपूर में सबसे ज्यादा पायी जाती है। गोंड जनजाति यह दुसरे नंबर की जनसंख्या वाली जनजाति है।

प्रत्येक संस्कृति में धर्म का सम्बन्ध व्यक्ति के मरणोपरांत जीवन एवं इस संसार से परे किसी अन्य संसार से होता है। जिस जीवन को मनुष्य संघर्ष से जुझते हुये जीता है उसका अचानक समाप्त उसकी मनोवैज्ञानिकता से सादृश्यता नहीं रखता। उसके अंत को स्वीकार करने में उसे अपनी निर्थकता का बोध होता हैं। धर्म विश्वासों का एक जगत प्रस्तुत करके जीवन के अंत के बोध को समाप्त करना है तथा मरणोपरांत एक कल्पना के संसार में

उसके जीवन की निरंतरता का बोध प्रस्थापित करता हैं। इस प्रकार से धर्म मनुष्य की एक मानसिक आवश्यकता है।

टाइलर वे पहले मानवशास्त्री थे जिन्होंने 'आत्माओं एवं प्रेतआत्मओं' में विश्वास कर के धर्म की सबसे पहले परिभाषा प्रस्तुत की थी। इसी परिभाषा को 'धर्म' की संकल्पना की चर्चा का प्रारंभिक बिन्दु माना जा सकता है।

वर्तमान एवं आधुनिक समाज वैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन को प्रमुख रूप से मानव जीवन में धर्म के अभिप्राय एवं सार्थकता/ उपयोगिता के विषय को अपने विश्लेषण का आधार बनाते हुए देखने का प्रयास किया संस्कृति के अन्य पक्षों से धर्म के तालमेल का क्या स्वरूप होता है। धर्म के क्षेत्र में परिवर्तन की क्या प्रक्रिया हो सकती है। विशेष रूप से मैलिनोवस्की के ट्रोबियांड द्वीपवासियों में किए गए अध्ययन एवं रैडक्लिफ ब्राऊन द्वारा अंदमान तथा निकोबार-द्विप समूह के निवासियों में किए गए अध्ययन ने धर्म की वैज्ञनिक अध्ययन-परम्परा की भुमिका प्रस्तुत की। रैडक्लिफ ब्राऊन ने धर्म से सम्बन्धति मैलिनोसकी के विचारों का अंदमान द्वीप समूह निवासियों में किये गये अपने अध्ययन में परीक्षण किया और वे मैलिनोवस्की से भिन्न निष्कर्षों पर पहूँचे। धर्म के आधुनिक वैज्ञानिकअध्ययन क्रम में दो ब्रिटिश मानवशास्त्रीयों-मैक्स ग्लकमैन तथा क्लिफर्ड गीट्ज के अध्ययन ने भी महत्वपूर्ण योगदान किया।

आधूनिक वैज्ञानिक दृष्टि में धार्मिक कर्मकांड के अध्ययन एवं विश्लेषण के वरीयता प्रदन की गई। इन कर्मकांडो के माध्यम से उन्होंने धार्मिक क्रियाओं के उन अप्रत्यक्ष प्रभावों का विश्लेषण किया जिनका आभास इन क्रियाओं में भाग ले व्यक्तियों को भी नहीं होता। सामाजिक वैज्ञानिकों की तेज नजर एवं बौद्धिक विवेचन ही धर्म की इस महत्त का अवलोकन कर सकती है। ईश्वरीय आदेशों के परिपालन में निहित नैनिकता से जुड कर लोग एक

व्यवस्थित सामाजिक जीवन को अंजान देते है। सामूहिक धार्मिक कर्मकांड व्यक्तियों मे अंतरिर्भरता की भावना जागृत कर पारस्परिक सहयोग के लिए प्रेरित करते है।

सैद्धांतिक स्तर पर आधुनिक सामाजिक सांस्कृतिक मानवशास्त्री संस्कृति को मानव-निर्मित- पर्यावरण के रूप में मानते हुये उसे सम्बन्धित पक्षो की एक व्यवस्था के रूप में स्वीकार करते है। प्राकृतिक एवं भौतिक विज्ञान की परम्परा में सामाजिक वैज्ञनिक भी व्यवस्था तथा संतुलन की अवधारणाओं का प्रयोग प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से करते है। वे इस दृष्टिकोण को वरीयता प्रदान करते है कि किसी भी प्रकार की अन्य व्यवस्थाओं की भाँति संस्कृति के विभिन्न पक्ष तथा प्रौद्योगिकी, अर्थव्यवस्था, सामाजिक संरचना तथा संस्थाए तथा धर्म परस्पर सह-सग्बन्धों के द्वारा एक व्यवस्था को जन्म देते है। इनमें से किसी भी एक पक्ष में हाने वाले परिवर्तन व्यवस्था को पुनर्गठित करते है अथवा व्यवस्था को भंग करने की भी शक्ति भी रखते है। संतुलन की स्थिति एक प्रकार की पूर्णता तथा संस्कृति के विभिन्न पक्षो में प्रकार्यात्मक सम्बन्धों की मान्यता पर बल देती है। आधुनिक सामाजिक,सांस्कृतिक,मानवशास्त्रियों में भी सांस्कृतियों के विभिन्न परिवेशों में धर्म तथा सांस्कृति के अन्य पक्षो में सह-सम्बन्धों को अपने अध्ययन का विषय बनाया ।

अध्याय 6 -निष्कर्ष

उपसंहार के रूप में यह कहा जा सकता है कि गोंड जब अपने समूह के साथ रहते थे तब यह लोग सिर्फ अपने मुख्य त्यौहार ही मनाते है।

जैसे - बडा भगवान का त्यौहार,अकाडी , अकरपरक इत्यादी

परंतु भूमी हस्तांतरण के कारण यह लोग अपने समूह से अलगकि अलग हो चूके है। क्यों-कि इन लोगों के पास कुशल कारखानेदारों ने उनको कारखानों में काम पर नही रखा था क्यों कि यह लोग अशिक्षित थे। इसलिए इनके पास कुशल कारागिर का ज्ञान नही था क्यों

कारागीर का ज्ञान नही था। इसके कारण इन लोगों को कारखानों में कामपर नहीं रखा जा था। कारखानेदारों ने जो पैसा उनको दिया था उसका उपयोग खाने -पिने और शराब पिने में खर्च कर दिया था। इसलिए यह लोग रोजगार ढूँढने शहर में आये और यही पर ही यह लोग काम करने लगे। यहॉं पर रहने के कारण इन लोगों का संपर्क शहरी लोगों से आया।

शहरों में रहने के कारण यह लोग अपने मुख्य त्यौहार तो मनाते थे परंतू इसके साथसाथ -हार धीरे हिंदू धर्म के पूरे त्यौ-यह लोग हिंदू धर्म के लोगों के संपर्क में आने के कारण धीरे साथ यह लोग हिंदू द-हार मनाने के साथमनाने लगे है। त्यौेवीदेवताओं को भी पूजने लगे -र्तीयां देवताओं के फोटो अथवा मू-अपने भगवान के मंदिरों में हिंदू देवी कि यह लोगहै क्यों देवताओं का वर्त भी रखने लगे है। इन -रखकर उनकी रोज पूजा करने लगे है। और हिंदू देवी पर हिंदू देवताओं का प्रभाव पड़ने के कारण यह लोग हिंदू धर्मके लोगों की महाराष्ट्र की जो बोली भाषा है वहीं भाषा गोंड जनजाति के लोग अपनी रोज की बोलभाषा में इस्तेमाल करने लगे है। गोंड लोगों की जो गोंडी भाषा थी वह भाषा यह लोग भूल गये है। गोंड जनजाति के लोग गोंडी भाषा भूल गये यह एक चिंताजनक बात है। क्योंकि गोंड लोगों ने गोंडी भाषा का जतन करके रखना चाहिऐ था।

गोंड जनजाति पर हिंदू धर्म के प्रभाव पड़ने के कारण यह लोग देवीदेवताओं की पूजा -देवताओं के मंदिर जाने लगे है। और पूजा करके भगवान को नारीयल -करने के लिए हिंदू देवी लढाने लगे है। हिंदू धर्म के प्रभाव के कारण यह लोग घरमें सत्यनारायण भगवान की पूजा ब्राहमण के हातों से करने लगे है। अब यह लोग बच्चे का जन्म होने के बाद बच्चे की जन्मकुंडली निकालने के लिए ब्राहमण के पास जाते है।

हिंदू धर्म के प्रभाव के कारण इन लोंगो के स्त्री और पुरूष के पहनावे में भी बदलाव आ गया है। क्योंकि गोंड जनजाति के लोग अब गोंडी पेहनावा न पहनकर हिंदू लोग जिस प्रकार के कपडे पहनते है उसी प्रकार का पहनावा गोंड जनजाति के लोग पहनने लगे है। हिंदू

धर्म के प्रभाव के कारण् इन लोगों ने अपने खान .पान में भी बदलाव लाया है। उदा- मांसाहारी भोजन न खाकर शुद्ध शाकाहारी भोजन खाना।